2 | रोजाना सबकी खबर

नई दिल्ली। शनिवार, 20 फरवरी, 2010

महंगाई की बहती गंगा में पैकेजिंग पेपर उद्योग भी हाथ धो रहा है

रोसख संवाददाता, नई दिल्ली। प्रेस कान्फ्रेंस को संबोधित करते हुए संयुक्त कार्यकारी समिति के पदाधिकारी ने बताया कि उत्तर भारत की क्राफ्ट पेपर मिल ने एक सप्ताह के अन्दर 3000 से 4000 प्रति टन तक की विभिन्न प्रकार के पैकेजिंग पेपर पर बढ़ोतरी कर दी है। पेपर पैकेजिंग उद्योग का मुख्या रॉ मैटिरियल है। जिसके रेट बढ़ने से पैकेजिंग उद्योग बन्द होने की कगार पर है। अन्य जरूरी वस्तुओं जैसे स्टार्च, स्टिचिंग वायर का मूल्य लगभग 50 प्रतिशत बढ़ चुका है। यह मिली-जुली बढ़ोतरी पैकेजिंग उद्योग को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। उक्त जानकारी देते हुए संयुक्त कार्यकारी समिति के संयोजक श्री हरीश मदान ने कहा कि इस विज्ञप्ति में पैकेजिंग उद्योग को चलाना असंम्भव हो गया है। हमारी कोरोगेटिड पैकेजिंग उद्योग बड़ी पेपर मिल्स व बड़े उपभोक्ताओं के बीच में सैंडविच बन कर रह गई है। पैकेजिंग उद्योग का भविष्य पेपर उद्योग के निर्माताओं के गैर जिम्मेदाराना रवैये से अंधकारमय होता जा रहा है। उत्तरी भारत के पेपर मिलों के मालिक सरकार की नीतियों को धता बताते हुए पेपर की कीमतें मनमाने ढंग से बढ़ा रहे हैं। हाल फिलहाल में 20 दिनों के अन्दर 3 बार एक-एक व दो-दो रूपये करके कीमतें बढ़ाई हैं। संयुक्त कार्यकारी समिति के सदस्य श्री सुशील सूद ने कहा कि पैकेजिंग उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कागज के निर्माता बेवजह कागज की कीमतें बढ़ा देते हैं। उन्होंने बताया कि 25 फरवरी को उत्तरी भारत पेपर मिल निर्माताओं ने दिल्ली के 'कनॉट' होटल में बैठक की और उसमें । रूपये प्रति किलो की दर से रेट बढ़ा दिया गया था।

हिन्दुस्तान 7

शनिवार, 20 फरवरी 2010

पेपर के रेट बढ़ने से पैकेजिंग उद्योग पर संकट के बादल

पिछले एक माह में 3 से 4 हजार रुपए प्रति टन हुई बढ़ोतरी

प्रमुख संवाददाता

नई दिल्ली

उत्तर भारत की क्राफ्ट पेपर मिल्स ने पिछले एक माह के भीतर 3000 से 4000 रु. प्रति टन की विभिन्न प्रकार के पैकेजिंग पेपर पर बढ़ोतरी कर दी है। पेपर, पैकेजिंग उद्योग का प्रमुख रॉ मैटेरियल है, जिसके दाम बढ़ने से पैकेजिंग उद्योग के सामने अस्तित्व का संकट खड़ा हो गया है। गौरतलब है कि दवाओं से लेकर दैनिक उपयोग में आने वाली हजारों वस्तुओं को पैकेजिंग बिना सप्लाई करना लगभग असंभव है।

पेपर मिलों के इस गैरजिम्मेदाराना रवैये के खिलाफ उत्तर भारत की प्रमुख कोरौगेटिड बाक्स मैनुफैकचर्स एसोसिएशनों ने कमर कस ली है। इन एसोसिएशंस ने अपनी एक संयुक्त कार्यकारी समिति भी गठित कर ली है।

समिति के संयोजक हरीश मदान के अनुसार बड़ी पेपर मिलों के गैर कानूनी रवैये की वजह से कोरौगेटिड पैकेजिंग उद्योग का भविष्य अंधकारमय होता जा रहा है। ये मिल मालिक बेवजह व मनमाने ढंग से कागज की कीमतों को बढ़ा रहे हैं। पिछले 20 दिनों के अंदर इन्होंने तीन बार ये कीमतें बढ़ा दी हैं। कागज मिलों की इन अनैतिक नीतियों व सरकारी निष्क्रियता के खिलाफ समिति ने तीन मार्च को जंतर-मंतर पर प्रदर्शन करने का फैसला लिया है ।